

आध्यात्म करता है
बौद्धिक स्तर का विकास



योग शिविर में उपस्थित युवक और युवतियां।

शिव आमंत्रण, बिलासपुर। वर्तमान में जो पढ़ाई हम पढ़ रहे हैं वह जरूर हमें अच्छी नौकरी, अच्छा पद देगी लेकिन उस स्तर की जिम्मेवारी को सम्भालने में, सामने आने वाली परिस्थितियों को पार करने के लिए जिस बुद्धि की जरूरत है वह केवल आध्यात्मिकता से ही प्राप्त होती है क्योंकि आध्यात्मिकता हमारे बौद्धिक स्तर का विकास करती है। उक्त बातें महाराजा रणजीत सिंह सभागार में आयोजित निःशुल्क सात दिवसीय योग शिविर के पहले दिन आईएएस/पीएससी स्टूडेंट्स को लक्ष्य के प्रति प्रेरित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मंजू ने कही। शिविर में सात प्राणायामों के साथ-साथ बीके मंजू ने योगनिद्रा के माध्यम से सभी के अवचेतन मन को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हुए सभी को अपना लक्ष्य निर्धारित कराया एवं उसकी प्राप्ति के लिए सुझाव दिये। इस अवसर पर योगिक जाँचिंग का अभ्यास भी कराया गया। टूटजा ट्यूटोरियल्स के डायरेक्टर एवं पूर्व डिप्टी कलेक्टर सुनील टूटजा ने कार्यक्रम के प्रति अपनी शुभकामना व्यक्त की एवं स्टूडेंट्स के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

अनुभवों के आधार से
योग अपनाओ : देव



अंबिकापुर। अंबिकापुर सेवाकेन्द्र में योग महोत्सव का आयोजन किया गया। तनावग्रस्त समाज के लिए संजीवनी राजयोग विषय पर आयोजित संगोष्ठी में छत्तीसगढ़ विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष टी एस सिंह देव ने कहा, कि हमें योग को जानकर, समझकर अपनाने है तो हमें उसका लाभ होता है। उसी प्रकार हमें योग विद्या को भी जानकर, समझकर अपने अनुभवों के आधार पर इसे अपनाया चाहिए। कार्यक्रम में 500 योगियों ने योग के वायब्रेण्ड्स फेलाये।

मीडिया सेमिनार : राष्ट्रीय मीडिया सम्मेलन में बोले वक्ता राजयोग आनन्द का एकमात्र उपाय

बाजारवाद ने लुप्त कर दिया जीवन का शाश्वत आनंद

शिव आमंत्रण ■ भोपाल

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पहल पर मीडिया सम्मेलन आयोजित हुआ। रविवार को अरेरा हिल्स के सेडमैप सभागार में वरिष्ठ पत्रकार विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि बाजार के आक्रामक फैलाव में नैसर्गिक आनंद का भाव कहीं लुप्त ही हो गया है। पहले सामाजिक धार्मिक आयोजनों के अखिर में एक उद्घोष होता था - आज के आनंद की जय। लेकिन अब यह सिर्फ एक स्मृति है। बाजार बेहिसाब तृष्णा पैदा कर रहा है। अनियंत्रित लालसा की पूर्ति के लिये हजारों ऐसी वस्तुएं पेश हैं जिनके बिना हमेशा से जीवन में ज्यादा सहज और आनंदपूर्ण था। शिक्षा और चिकित्सा जैसी बुनियादी जरूरतों को भी मुनाफे के बाजार में तब्दील कर दिया गया है।

सत्तर साल से सरकारों ने शिक्षा प्रणाली को धर्म व जाति की जकड़न में डाला है। यह राष्ट्रियता एकता और मानवीय मूल्यों में बीजारोपण का जरिया नहीं बन पाई। ऐसे में मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह नागरिकों के जीवन में आनंद की खोज में मददगार बनें।

वरिष्ठ पत्रकार राजेंद्र शर्मा ने कहा, कि हजारों सालों से भारत का मूल दर्शन ही शाश्वत आनंद की खोज पर केंद्रित रहा है। हमारे ऋषियों ने संसार को दर्शन व ध्यान की विरासत सौंपी है, जिसका लक्ष्य ही जीवन को सार्थक करना है। जरूरत है कि समाज संस्थाओं और सरकारों इस अमूल्य धरोहर को व्यवहारिक जीवन में उतारने के लिये पहल करें।

राजयोग मेडिटेशन प्रभावशाली

ब्रह्माकुमारीज़ की जोनल डायरेक्टर राजयोगिनी बीके अवधेश ने दैनिक जीवन में राजयोग मेडिटेशन को सबके लिये प्रभावशाली बताया। गॉडलीवुड स्टूडियो पीस न्यूज के सम्पादक बीके कोमल ने संस्थान की गतिविधियों की जानकारी



कार्यक्रम में पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

दा। सासायटा ऑफ मांडिया इन्शाएक्टव फॉर वैल्यूज के समन्वयक कमल दीक्षित, शिवानुराग पट्टेरिया, गिरीश उपाध्याय, प्रो. पुष्पेंद्रपाल सिंह, अश्विनी मिश्रा, अनिल सौमित्र, सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके रीना समेत कई शहरों के मीडिया प्रतिनिधि शामिल हुए।

आपसी बिखराव को रोकने में सहायक बने मीडिया



आनन्द समाज से लुप्त हो गया है। लोग भौतिक साधनों में वस्तुओं में ही दूढ़ रहे हैं। जबकि आनन्द का उद्भव अच्छे कर्मों में है। जब आप दूसरों के लिए अच्छा करेंगे तो खुशी और आनन्द स्वतः मिलना प्रारम्भ हो जायेगा।

- **पिनाज त्यागी**, उप सम्पादक, न्यूज नेशन, नोएडा

आपसी सामंजस्य से मिलेगी खुशी

हम अपना परिवार संवारना चाहते हैं परन्तु दूसरों को बिखराव में आनन्द लेते हैं। जब तक यह प्रवृत्ति रहेगी तब तक असली आनन्द के लिए भागते रहेंगे। खुशी और आनन्द आपसी सामंजस्य और भाईचारे में है ना कि बिखराव में। राजयोग की भूमिका इसमें महत्वपूर्ण है। - **आलोक संजर**, सांसद, भोपाल

सकारात्मक नजरिया जरूरी

तमाम भागमभाग और भौतिकवाद के युग में नकारात्मक खबर भी सकारात्मक अनुभूति करा सकती है। बशर्ते उसे उस भाव से लिया जाये। क्योंकि जब हम नकारात्मकता में सकारात्मक तथ्यों को दूढ़ेंगे तो सकारात्मकता का विकास होगा। **विजय मनोहर तिवारी**, सम्पादक, दैनिक भास्कर, भोपाल

वर्तमान चुनौतियों का समाधान राजयोग में

आज मीडिया में लगातार चुनौतियां बढ़ती जा रही हैं। इसके समाधान के जितने भी तरीके इजाजत किये जा रहे हैं वे नाकामी साबित हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में मीडियाकर्मियों को जीवन में आनन्द के लिए राजयोग का मार्ग बेहतर है। **सुनील शुक्ला**, सम्पादक, नई दुनिया, भोपाल

सोशल मीडिया की खबरों की सत्यता जानना जरूरी : सुमीत अवस्थी

शिव आमंत्रण, भिलाई। कोई पिता यह नहीं सिरखाता कि गलत करो, लेकिन आज कॉम्प्यूटिशन में लोग माँ-बाप की शिक्षाओं को भूल जाते हैं, क्योंकि सबके पास सोशल मीडिया है। जिसके माध्यम से हरेक अपने मनोभाव व्यक्त करता है। लेकिन इसका उपयोग विवेक को जगाकर करना चाहिए। सोशल मीडिया में जो भी करते हैं, उसकी सत्यता को परखकर ही उपयोग करें। उक्त विचार संस्थान द्वारा मीडिया कर्मियों के लिए आयोजित सेमिनार में मुख्य वक्ता। न्यूज 18 इंडिया के सुमीत अवस्थी ने व्यक्त किये। कुशाभाऊ ठाकरे विवि के कुलपति डॉ. मानसिंह परमार ने कहा, कि आज दुनिया को नकारात्मकता पूर्ण खबरें परोसी जा रही हैं। मीडिया से जुड़े लोगों को इनसे अपने आप को दूर रखना जरूरी है। पं. माखनलाल चतुर्वेदी विवि के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. कमल दीक्षित ने बताया कि अभी पत्रकारों को बहुत से मानसिक तनाव हैं जिसके कारण उनको अनेक मानसिक तथा शारीरिक परेशानियों से गुजरना पड़ता है। पत्रकारिता में रचनात्मकता और मानसिक ऊर्जा चाहिए। लेकिन इन दोनों के लिए सर्वप्रथम आंतरिक सशक्तिकरण जरूरी है। सेवाकेन्द्र संचालिका बीके आशा, बीके प्राची ने भी अपने विचार व्यक्त किये।



चांद मिश्रा को दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड



मिश्रा को अवार्ड प्रदान करती फिल्म अभिनेत्री रविना टंडन

शिव आमंत्रण, मुंबई। दादा साहेब फाल्के एक ऐसे महापुरुष थे जिन्हें भारतीय फिल्म उद्योग का पितामह कहा जाता है। इसलिए आज भी उनके नाम पर भारत सरकार द्वारा दादा साहेब फाल्के पुरस्कार प्रदान किया जाता है जो कि भारतीय सिने जगत का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार है।

इस बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़े चांद मिश्रा को दादा साहेब फाल्के एकेडमी अवॉर्ड फॉर बेस्ट बिजनेस मैनेजर ऑफ सिने स्टार का अवॉर्ड

मिला। संस्थान द्वारा बनाए गए टेलीफिल्मस दिव्य ज्योति, 13थ डे और हू एम आई जैसे कई फिल्मों के आप प्रोड्यूसर रहे हैं और वर्तमान समय फिल्मी जगत में अभिनेत्री रविना टंडन व प्रियंका चोपड़ा के बिजनेस मैनेजर हैं। मुंबई में विलेपार्ले के भाईदास ऑडिटोरियम में 148वे दादा साहेब फाल्के जयंति सेलिब्रेशन के दौरान फिल्म अभिनेत्री रविना टंडन तथा विख्यात अभिनेता परीक्षित साहनी ने चांद मिश्रा को फाल्के बिजनेस मैनेजर फॉर सिने स्टार अवॉर्ड देते हुए उनकी तारीफों के पुल बांधे और खुशी जाहिर की। इस मौके पर मलाइक सेवकेंद्रों की प्रभारी बीके कुंती ने उन्हें शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

योग से मिलेगा अच्छा स्वास्थ्य और तनाव मुक्त जीवन : गौतम

शिव आमंत्रण, रायपुर। छत्तीसगढ़ के गृह सचिव अरूण देव गौतम ने कहा, आदमी स्वयं की पहचान को भूलने की गलती कर रहा है। जिसके कारण समाज में तनाव बढ़ रहा है। विशेषकर युवा वर्ग ज्यादा इसके गिरफ्त में आ रहा है। बड़ी संख्या में लोग डिप्रेशन का भी शिकार हो रहे हैं। यदि हमने जीवन में योग को अपना लिया तो स्वस्थ रहने का इससे अच्छा साधन और कोई नहीं है। श्री गौतम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा शान्ति सरोवर में आयोजित योग महोत्सव का उद्घाटन करने के बाद अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा, कि समाज में वैमनस्यता बढ़ती जा रही है। दुनिया विश्व युद्ध की कगार पर आकर खड़ी है। योग से तनाव दूर होगा और सामाजिक विषमताओं को दूर करने में मदद मिलेगी। गृह सचिव ने कहा, कि जिस दिन हमें यह महसूस होगा कि



दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

जिस चीज के लिए हम भौतिक साधनों के पीछे दौड़ रहे हैं, वह हमारे अन्दर ही है तो उस दिन हमारी दौड़ समाप्त हो जाएगी। उन्होंने कहा कि स्वस्थ रहने के लिए योग एक प्रिवेन्टिव मेडिसीन की तरह है। माउण्ट आबू से पधारे मासिक पत्रिका ज्ञानामृत के प्रधान सम्पादक ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश ने कहा कि योग का अर्थ है जोड़ना। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आसन या प्राणायाम जरूरी है

लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकारों से आत्मा को दूर करने के लिए राजयोग साधना की जरूरत होती है। क्षेत्रीय निदेशिका बीके कमला ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान से आज लाखों लोग जुड़े हुए हैं जो कि राजयोग को अपनाकर तनावमुक्त और शान्ति मय जीवन जी रहे हैं। राजयोग शिक्षिका बीके रश्मि ने कहा कि राजयोग हमें विपरीत परिस्थितियों में भी शान्त रहना सिखलाता है।

उच्च जीवन के लिये व्यंजन की भूमिका

हमारे समस्त कार्य-कलाप भोजन पर आधारित है। मानसिक विकास भी तो भोजन से ही होता है। तभी तो कहा है - "जैसा अन्न, वैसा मन"। प्राचीन ऋषि-मुनि ही नहीं गृहस्थी लोग भी आध्यात्मिक उत्थान के लिये तामसिक भोजन को निषेध समझते थे। आज तक भी धार्मिक अनुष्ठानों में लहसुन-प्याज आदि का प्रयोग वर्जित है। ये उत्तेजित कर वासनाओं को बढ़ाते हैं। तामसिक भोजन का वैचारिक जीवन पर कितना बुरा प्रभाव पड़ता है, इसके बारे में बहुत-से लोग अनभिज्ञ हैं। **बीके रामलखन, शांतिवन**

आ पको पता होना चाहिए कि खाया गया भोजन तीन भागों में विभाजित हो जाता है। इसका स्थूल अंश - मल, मध्य भाग, रस-रक्त आदि में तो सूक्ष्म अंश से हमारे मन-बुद्धि का विकास होता है। जैसे दही का सार मक्खन कहलाता है, वैसे ही भोजन का सत्व मन-बुद्धि को प्रभावित करते हुए जीवन को उचित दिशा भी देता है।

कणा नीचे जमीन पर गिर जाये तो उठा कर माथे पर क्यों लगाते हैं? क्योंकि भोग - भगवान की याद में शुभभावना से सम्पूर्ण सात्विक बनाया जाता है। व्रत-उपवास के साथ उस समय पवित्रता, निर्मलता का भी पालन किया जाता है। तन-मन की शुद्धता का प्रसाद पर इतना असर पड़ जाता कि प्रसाद बनाने वाले, खाने वाले, खिलाने वाले तथा घर में रहने वाले सभी में प्रफुल्लता आ



हम आत्मायें मन-बुद्धि-संस्कारों के द्वारा व्यवहार में आती हैं। आत्मा मन के ही द्वारा विभिन्न अंगों से कार्य करती है परन्तु मानसिक कार्यों को करने के लिये शक्ति रूपी ईंधन तो भोजन से ही मिलता है। जैसे बस चलती तो डीजल से है, परन्तु राकेट? अन्तरिक्षयान से भी अति गतिमान मन को सुचारू रीति से चलाने के लिये समय के अनुसार अब ब्रह्मा-भोजन की बहुत ही आवश्यकता है। मनमनाभाव, मध्याजीभव भी हम तभी सहज रीति से हो सकते हैं। सभी के घरों में प्रतिदिन भोजन बनता पर कभी-कभार भोग-प्रसाद भी बनता है। प्रतिदिन के भोजन और प्रसाद में आप बहुत बड़ा अन्तर पाते हैं, जबकि बनाने वाले लोग वही, स्थान-समान, उपकरण भी वही होते हैं। भोग-प्रसाद का एक

जाती है। यदि इसी तरह नियमित भोजन बनाया जाय तो रोज का भोजन ही भोग-प्रसाद बन जाये। भोजन के साथ-साथ सभी कर्म व सम्बन्ध भी परमात्मा की प्यारी याद के साथ निभाये जायें तो घर ही मन्दिर और जीवन - अमृत समान हो जायेगा। देवी-देवतायें भी हमारी ही तरह हाथ-मुँह, पैर, आँख-नाक-कान वाले थे परन्तु उनकी यादगार मूर्तियों को मन्दिरों में रखकर पूजा-वंदन किया जाता है, क्यों? आज के प्रवृत्ति वाले देवताओं के सामने खड़े होकर "विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा" क्यों कहते हैं? देवी-देवतायें सात्विक-शुद्ध भोजन ही करते थे, इसलिये प्रसाद में आज तक भी शुद्ध चीजों का ही प्रयोग किया जाता है। सात्विक भोजन को भगवान को भोग लगा कर खाने से जीवन में ईश्वरीय शक्तियाँ व सद्गुण समाहित होते जाते हैं। क्रमशः...



पनवेल में शारीरिक योगाभ्यास

महाराष्ट्र के पनवेल में शारीरिक योगाभ्यास करते राजयोगी।

ज्ञान सरोवर में ग्राम विकास सम्मेलन देशभर से आये किसानों का मंथन स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है जैविक व यौगिक खेती

शिव आमंत्रण ■ माउंट आबू

मध्य प्रदेश किसान कल्याण, कृषि विकास मंत्री गौरीशंकर बिसेन ने कहा कि अध्यात्म से मूल्यों को निखार लिया जाए तो किसानों की आर्थिक उन्नति तीव्रगति से हो सकती है। जब पूरे मनोयोग से किसी कार्य को किया जाता है तो उसके सकारात्मक परिणाम स्वतः प्राप्त होते हैं। वे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ज्ञान सरोवर अकादमी परिसर में ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन के समापन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यौगिक व जैविक खेती अति उत्तम है। स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद जैविक व यौगिक खेती को बढ़ावा देना चाहिए। ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा गांव-गांव में किए जा रहे कार्य सार्थक सिद्ध हो रहे हैं। प्रकृति मानवीय आवश्यकताओं को नियमानुसार पूरा करने में सक्षम है,



दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

बशर्ते प्राकृतिक नियमों के अनुरूप मानव उनका सदुपयोग करे। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्ष बिके सरला ने कहा, कि प्राचीन भारतीय संस्कृति व सभ्यता सुख, शान्ति से जीने का तरीका सिखाती है। ग्रामीण जीवनशैली को पाश्चात्य संस्कृति से दूर रहना चाहिए।

आधुनिकता से समन्वय जरूरी
गुजरात के दाहोद शहर से आए इंडोजर्मन वाटरशैड मैनेजमेंट के

अध्यक्ष राजेश दवे ने कहा, कि गांव के बेहतर उत्थान को मेहनतकर्ता किसानों को आधुनिकता व अध्यात्मिकता का समन्वय रखना आवश्यक है। गांववासियों को नैतिकता जैसे जीवनोपयोगी मूल्यों से संपन्न करने का जो संगठन की ओर से भगीरथ कार्य किया जा रहा है वह खुली किताब की तरह है। संगठन के कार्यकारी सचिव बिके मृत्युंजय ने कहा, कि किसान के मन में संकल्प रूपी बीज सकारात्मक हो

तो अनाज भी शक्ति प्रदान करने वाला होता है। जैविक खादों के प्रयोग से अनाज की पौष्टिकता भी उच्च गुणवत्ता वाली होती है।

मनोबल बढ़ाता है राजयोग

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका बीके सुषमा ने कहा, कि समाज के हर तबके को मानसिक शान्ति व शक्ति प्राप्त करने के लिए राजयोग का अभ्यास करने की जरूरत है। राजयोग मनोबल को बढ़ाने में सहायक है। वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका बीके गीता ने कहा कि गांवों के सर्वांगीण विकास को ग्रामवासियों में एकता के साथ आपसी सदभाव, प्रेम, सुख, शान्ति आदि मूल्यों को महत्व देना चाहिए। कार्यक्रम में प्रभाग के अधिशासी सदस्य बिके राजेंद्र, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बिके किरण आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

उमड़े हजारों लोग



चेन्नई के राजारथिनम स्टेडियम में लगभग 1 हजार से अधिक पुलिसकर्मी शारीरिक व्यायाम करने के साथ ही राजयोग के महत्व को समझा। जिसमें तमिलनाडु जोन की सर्विस कॉर्डिनेटर बिके बीना समेत कई सदस्य शामिल थे। यह कार्यक्रम चेन्नई सिटी पुलिस कॉरपोरेशन और ब्रह्माकुमारीज के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया था। सायंकालीन कार्यक्रम में 4000 से अधिक लोगों का हुजूम योग करने के लिए उमड़ा।

शांतिवन के योग में सहभागी हुए हजारों लोग



अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर आबूरोड स्थित ब्रह्माकुमारीज मुख्यालय के डायमंड हॉल में योगाभ्यास करते राजयोगी व गणमान्यजन।

शिव आमंत्रण, आबूरोड। अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर सिरोही में भी योग दिवस धूमधाम से मनाया गया। माउण्ट आबू तथा आबू रोड में ब्रह्माकुमारीज संस्थान तथा आयुष मंत्रालय के संयुक्त तत्वाधान में योग एवं राजयोग के आयोजन से पूर्व पूरे देशभर से आये हजारों लोगों ने

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के विशाल डायमंड हॉल में योगाभ्यास किया। इस मौके पर संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह, शांतिवन के मुख्य अभियन्ता बिके भरत समेत कई लोगों ने भाग

लिया। इस दौरान आबू रोड के पालिकाध्यक्ष सुरेश सिंदल तथा स्थानीय लोग भी उपस्थित थे। अतिथियों ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि अधिक से अधिक लोगों को जुड़कर इस अभियान को सफल बनाना चाहिए।

गॉड्स विज़डम फॉर पीस कार्यक्रम नेपाल में प्रारंभ



दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ करते अतिथि।

शिव आमंत्रण, काठमांडू। गॉड्स विज़डम फॉर पीस एण्ड हैप्पीनेस विषय पर राष्ट्रीय शुभारंभ कार्यक्रम में उप प्रधानमंत्री तथा शिक्षा मंत्री गोपाल मान श्रेष्ठ ने शिरकत की और कहा, कि

संस्थान शांति और मानव उत्थान के लिए जो कार्य कर रहा है वो बहुत ही सराहनीय है और भविष्य में देश में समृद्धि और देशवासियों में सदभाव और एकता का सपना अवश्य साकार होगा ये

ईश्वरीय सौगात



काठमांडू में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर इंडियन एम्बेसी की ओर से आयोजित कार्यक्रम में अभिनेत्री मनीषा कोइराला को ईश्वरीय सौगात भेंट करतीं बिके राज दीदी।

मेरी शुभकामना है। समारोह में समाजसेवी इंदिरा श्रेष्ठ ने सम्मान, स्नेह और समानता का भाव रखने का संदेश दिया। काठमांडू जोन की निदेशिका बिके राज ने बताया, कि विश्व परिवर्तन की शुरूआत स्व परिवर्तन से ही होगी। अंत में सभी अतिथियों को बिके राज ने शॉल ओढ़ाकर व ईश्वरीय सौगात भेंट कर पुनः आने का निमंत्रण दिया। इस मौके पर बिके रामसिंह, बिके अमृत, माउंट आबू से आए बिके संजय समेत कई बिके सदस्यों ने अपनी उपस्थिति से वातावरण में उर्जा का संचार कर दिया।

सम्पादकीय

यदि पेट बनेगा शमशान तो कैसे आयेंगे शुद्ध विचार

श मशान शब्द आते ही सबके मन में एक अलग सी लहर छा जाती है। जब व्यक्ति शमशान में जाता है उसे वैराग्य हो जाता है। क्योंकि वहाँ मृत व्यक्ति का अंतिम संस्कार किया जाता है। उसमें जाने के बाद आदमी अशुद्ध माना जाता है और इसे दूर करने के लिए वह स्नान करता है। अब सवाल ये है कि जब हम शमशान में जाने के बाद खुद को अशुद्ध मानने लगते हैं और फिर स्नान कर खुद को शुद्ध करते हैं। फिर हम अपने पेट को शमशान क्यों बनाते हैं। अब आपको लगता होगा कि यह कैसा अटपटा सवाल है। परन्तु यह सत्य है। जब मनुष्य जानवरों के मांस का भक्षण करता है तो इस लिहाज से तो वह अपने पेट को ही शमशान बना लेता है। तो क्या पेट की शुद्धि करता है। जब पेट में कुछ भी डालेंगे तो मन वैसा ही थॉट करेगा। जैसा अन्न वैसा मन, जैसा पानी वैसी वाणी कहावत प्राचीन काल से ही चलती आ रही है। यह झूठ तो नहीं कहा गया है। इसका तात्पर्य है कि जिस तरह का अन्न होता है उपभोग करने वाले पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है। इसलिए शुद्ध अन्न उपयोग करने की हमेशा सलाह देती है। वैज्ञानिकों ने माना है कि जब व्यक्ति अन्न ग्रहण करता है तो उसके अन्दर उस अनाज का असर प्रारम्भ हो जाता है। दूषित और आसुरी भोजन का ग्रहण करने के बाद मनुष्य के अन्दर आसुरी प्रवृत्ति का विचार उत्पन्न होने लगता है। परन्तु जब व्यक्ति शुद्ध अन्न का उपयोग करता है तो उसके मन में सकारात्मक और शुद्ध विचारों की उत्पत्ति होती है। यही व्यक्ति के व्यवहार और कर्म का आधार बनती है। क्योंकि यदि सोच बदलेगी तो व्यक्ति का नजरिया और दृष्टिकोण बदलेगा। यही कर्म में उतरता है। फिर व्यक्ति श्रेष्ठ कर्म की ओर बढ़ता है। इसलिए हमें अपने पेट को शमशान बनाने के बजाए मंदिर बनायें। जहाँ परमात्मा की आस्था और उनके शक्ति का विकास हो सकता है। यही एक रास्ता है आंतरिक विकास और श्रेष्ठ मानव सृजन का। परमात्मा ने हम मनुष्यों को इस सृष्टि पर श्रेष्ठता की उपाधि से भेजा था। परन्तु हम क्या कर रहे हैं। यह हम सबको सोचने की जरूरत है। हम रामायण, भागवद गीता, वेद, पुराण शास्त्र का अध्ययन करते हैं कि हम एक नेक और मूल्यनिष्ठ इंसान बनें। इसके दूसरी तरफ हम अपने कर्म ऐसे कर रहे हैं जिसका जिक्र सृष्टि चक्र के सबसे खराब युग रावण के सन्दर्भ में भी नहीं गयी थी। फिर यह कौन सा युग है, क्या इससे और दुनिया में गिरावट आयेगी। ऐसे में परमात्मा स्वयं मनुष्यों को श्रेष्ठचारी बनाने का महान कार्य कर रहे हैं। जिसमें हम सबको सहभागी बनें।

जलवायु परिवर्तन से दुनिया को बचाने के लिए इंसानों के पास बचे हैं केवल 3 साल

पिछले कुछ वर्षों में पूरे विश्व की बदलाव की बात समय प्रति समय आती रहती है। चाहे वह धार्मिक, आध्यात्मिक या प्रकृतिक। पर्यावरण के बदलाव से भी विश्व बदलाव की बात कही गयी है। अब यह अपने असली रूप में आने लगी है। जवायु बदलाव की रिपोर्ट लंदन की प्रतिष्ठित मेटेओजिन नेचर में प्रकाशित हुआ है। जिसपर दुनिया के साठ से ज्यादा वैज्ञानिकों ने सहमति जताई है। जिसमें कहा गया है कि केवल तीन वर्ष बचे हैं इंसानों को दुनिया बचाने के लिए। लंदन की प्रतिष्ठित पत्रिका नेचर में छपी लेख पर एक रिपोर्ट:

शिवआमंत्रण, आबू रोड/लंदन। दुनिया को अगर ग्लोबल वॉर्मिंग और जलवायु परिवर्तन के जानलेवा खतरों से बचना है, तो इंसानों के पास ऐसा करने के लिए केवल 3 साल बचे हैं। प्रतिष्ठित पत्रिका नेचर में छपे एक लेख में वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं ने यह चेतावनी दी है। उनका कहना है कि ग्रीन हाउस गैस के उत्सर्जन में सार्थक कमी लाने की शुरुआत करने के लिए दुनिया के पास अब केवल 3 साल का वक्त बचा है। **तो हमेशा के लिए इंसान के हाथों से निकल जायेगी स्थितियां.....** अगर इतने समय में कार्बन गैसों के उत्सर्जन में प्रभावी कमी नहीं लाई गई, तो पेरिस समझौते में तापमान को लेकर जो लक्ष्य तय किया गया था उसे हासिल करना लगभग नामुमकिन हो जाएगा। साथ ही, स्थितियां शायद हमेशा के लिए इंसानों के हाथ से निकल जाएगी। विशेषज्ञों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन और धरती के तापमान के लिहाज से 2020 का साल बेहद अहम और निर्णायक साबित होने वाला है। नेचर में छपे इस लेख पर दुनिया के जाने-माने 60 से भी ज्यादा

वैज्ञानिकों ने अपने हस्ताक्षर किए हैं। इस लेख में वैज्ञानिकों द्वारा जमा किए गए सबूतों के आधार पर विश्व के राष्ट्राध्यक्षों व नेताओं से अपील की गई है कि वे सच से मुंह न मोड़ें। लेख में कहा गया है कि सभी इको सिस्टम्स (पारिस्थितिक तंत्र) में विनाश की शुरुआत हो चुकी है। आर्कटिक में गर्मियों के दौरान जमी रहने वाली बर्फ गायब हो गई है और बढ़ते तापमान के कारण मूंगे की चट्टानें (कोरल रीफ्स) भी खत्म हो रही हैं।



बढ़ जायेगा 2 डिग्री सेल्सियस तापमान ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन मौजूदा रफ्तार से होता रहा, तो अगले 4 से लेकर 26 सालों के बीच ही इतना कार्बन उत्सर्जित हो जाएगा कि तापमान में डेढ़ से लेकर 2 डिग्री सेल्सियस का इजाफा होगा। पेरिस क्लाइमेट डील में अहम भूमिका निभाने वाली क्रिस्टियाना फेगेरिस जो कि

जलवायु परिवर्तन से जुड़ी संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन की कार्यकारी सचिव भी हैं, के नेतृत्व में वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों की एक टीम ने यह बात कही है। क्रिस्टियाना ने कहा कि हमें तत्काल अपने प्रयासों में गंभीरता लानी होगी। उन्होंने कहा, 2020 का साल हमारे लिए बहुत अहम है। राजनीति से कहीं ज्यादा भौतिकी के लिए यह साल काफी अहम है। **2020 का साल अहम** इसी साल

अप्रैल में छपी एक रिपोर्ट का जिक्र करते हुए क्रिस्टियाना ने कहा, अगर 2020 के बाद भी इसी रफ्तार से कार्बन उत्सर्जन होता रहा या फिर इससे ज्यादा ग्रीन हाउस उत्सर्जन हुआ, तो पेरिस डील में दुनिया ने अपने सामने जो लक्ष्य रखे थे उन्हें हासिल कर पाना लगभग नामुमकिन हो जाएगा। उन्होंने आगे कहा, दुनियाभर में कार्बन उत्सर्जन को कम करना बहुत बड़ी चुनौती है, लेकिन शोध

बताते हैं कि ऐसा करना व केवल बेहद जरूरी है बल्कि कोशिश की जाए, तो यह मुमकिन भी है। 1880 के दशक से लेकर अबतक मानवीय गतिविधियों के कारण हुए कार्बन उत्सर्जन से दुनिया का तापमान 1 सेल्सियस तक बढ़ गया है।

अंटार्कटिक में तेजी से पिघल रही बर्फ की चादर स्वीडन के नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक ने 1895 में सबसे पहले यह बात कही थी। लेख में तापमान बढ़ने के प्रभावों का भी विस्तार से जिक्र किया गया है। कहा गया है, ग्रीनलैंड और अंटार्कटिक में बर्फ की चादरें तेजी से पिघल रही हैं। आर्कटिक में गर्मियों के दौरान मौजूद रहने वाली बर्फ गायब हो रही हैं। गर्मी के कारण कोरल रीफ्स मर रही हैं और सारे इको सिस्टम्स में तबाही की शुरुआत हो गई है।

लेख में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन के कारण लू के जानलेवा थपड़े चलेंगे, अकाल आएगा और समुद्र के पानी का स्तर बढ़ जाएगा। इन सारे बदलावों का पहला असर कमजोरों पर होगा।

जिंदगी संवार देती है सकारात्मक ऊर्जा

ब्रे न अर्थात हमारा जो यह दिमाग है इसके अंदर इतनी ज्यादा ऊर्जा है जिसका अगर सही इस्तेमाल किया जाए तो हमारी जिंदगी संवर भी सकती है लेकिन अगर इसका थोड़ा भी गलत इस्तेमाल किया जाए तो हमारे लिए बहुत ज्यादा हानिकारक सिद्ध हो सकता है। इन्हीं बातों पर चर्चा करेंगे इनके बारे में जानने के लिए हमारे साथ है शक्ति भाई जी। **प्रश्न:** हमारे मन में एक बहुत बड़ी शक्ति है ऐसा कहा जाता है, परन्तु उसका एहसास कैसे करें? **उत्तर:** सबसे पहले तो आपको बताना चाहेंगे कि माइंड और ब्रेन दोनों अलग चीजें हैं। माइंड हमारा फिजिकल पार्ट है जिसको हम सॉफ्टवेयर कहते हैं और ब्रेन हमारा फिजिकल पार्ट है जिसको हम टच

कर सकते हैं जैसे पंखा, आप पंखे को देख पाते हैं परन्तु हवा को नहीं देख पाते। हेलेन कलक कहते हैं कि वह दुनिया की सबसे महान चीज होती है सबसे प्रसिद्ध चीज होती है सबसे शक्तिशाली चीज होती है। आज पूरी दुनिया रू वर्ड के ऊपर डिपेंड है। देखा जाए तो मैन, मनी, मशीन, मटीरियल आज पूरी दुनिया चारों रू पर डिपेंड है। लेकिन यह चारों रू किस पर डिपेंड है? मैन के लिए कॉलेज है, मनी के लिए कॉलेज है, मशीन के लिए कॉलेज है पर माइंड के लिए कोई एजुकेशन नहीं दिया जा रहा है। माइंड के लिए कुछ एक पावर नहीं दी जा रही है हम अपने मन को शक्तिशाली बना ले। एक और रू है जिसका नाम है मैडिटेशन। यदि हम मैडिटेशन के श्रु अपने माइंड को शक्तिशाली बना ले, तो रीप्रोग्रामिंग कर ले, तो हम दुनिया की कोई भी बात, कोई भी लक्ष्य सब अचीव कर पाएंगे। देखिए माइंड को ट्रेन करने के लिए हम 1 टेक्निक यूज कर सकते हैं

Mind Power



जिसका नाम है क्राफ्ट CRAFT **C फॉर कैसिल R फॉर रिप्ले A फॉर अफमेशन F फॉर फोकस T फॉर ट्रेनिंग** तो सबसे पहले हम कैसिल की बात करते हैं यदि हमारे दिमाग में कोई नेगेटिव थॉट आ रहा है सबसे पहले हम उसे कैसिल करेंगे। बार-बार जैसे कभी भी नेगेटिव थॉट आती है तो हम एक कमांड देते जाएंगे कैसिल। तब ऑटोमेटिकली हमारे माइंड कि, हमारे सब कॉन्शियस माइंड की प्रोग्रामिंग हो जाएगी की इस थोट को नहीं लेना है। **क्रमश . . .**

सांसों पर नियंत्रण का नाम है प्राणायाम

योग में कई तरह के प्राणायाम का वर्णन मिलता है, लेकिन इन प्रमुख प्राणायामों व कपालभाति के फायदे सर्वाधिक हैं। प्राण वह शक्ति है जो शरीर को जिंदा रखती है और हमारे मन को शक्ति देती है। प्राण से हमारी जीवन शक्ति का उल्लेख होता है और अयाम से तात्पर्य है उसे नियंत्रित करना। इसलिए प्राणायाम का अर्थ हुआ खुद की जीवन शक्ति को नियंत्रित करना। प्राण शरीर की हजार सूक्ष्म ऊर्जा ग्रंथियों और ऊर्जा के केंद्रों से गुजरता है और शरीर के चारों ओर आभामंडल बनाता है। प्राणशक्ति की मात्रा और गुणवत्ता मनुष्य की मनोस्थिति निर्धारित करते हैं। अगर प्राणशक्ति बलवान है और उसका प्रवाह निरंतर और स्थिर है तो मन सुखी, शांत और उत्साहपूर्ण रहता है पर ज्ञान के अभाव में और सांस पर ध्यान न रखने की वजह से हमारी नाड़ियां, प्राण के प्रवाह में रूकावट पैदा कर सकता है। ऐसी स्थिति मन में आशंका चिंताएं और डर उत्पन्न कर सकती हैं।

प्राणायाम के फायदे प्राण शक्ति की मात्रा और गुणवत्ता बढ़ता है। रूकी हुई नाड़ियां और चक्रों को खोल देता है। जीवन में उत्साह पैदा करता है। मन को स्पष्टता मिलती है। अच्छी सेहत आती है। शरीर, मन और आत्मा में तालमेल बनता है। **भस्त्रिका प्राणायाम** अगर आप ऊर्जा की कमी महसूस कर रहे हैं तो भस्त्रिका प्राणायाम के तीन दौर करें- आप खुद को तुरंत शक्ति से भरपूर पाएंगे। **भ्रमरी प्राणायाम** मन विचलित हो या आपका किसी की बात से अपना मन हटा ही नहीं पा रहे हों तो भ्रमरी प्राणायाम करना चाहिए। रक्त चाप से पीड़ित लोगों के लिए भी बहुत फायदेमंद है।

नाड़ी शोधन प्राणायाम किसी भी काम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए नाड़ी शोधन प्राणायाम को नौ बार करें और उसके बाद 10 मिनट तक ध्यान करें। नाड़ी शोधन प्राणायाम दिमाग के दाएं और बाएं शोधन प्राणायाम दिमाग के दाएं और बाएं हिस्से में सामंजस्य बैठाता है। **शीतली प्राणायाम** यह प्राणायाम दिमाग को शीतलता का अनुभव करता है। शरीर में खनिजों के अवशोषण में भी मदद करता है। सर्दी से पीड़ित लोग इसे न करें। सर्दी के मौसम में भी इसे नहीं करना चाहिए। **कपालभाति** नाड़ियों की रूकावटों को खोलने हेतु कपालभाति उपयुक्त है। यह प्रक्रिया शरीर के विषहरण के लिए भी उपयुक्त है।



दादी की यादें



पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि से आशीर्वाद लेते प्रधानमंत्री मोदी



पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के साथ दादी प्रकाशमणि जी



पूर्व राष्ट्रपति डा. अब्दुल कलाम के साथ दादी प्रकाशमणि जी



अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति नेलसन मंडेला के साथ दादी प्रकाशमणि जी



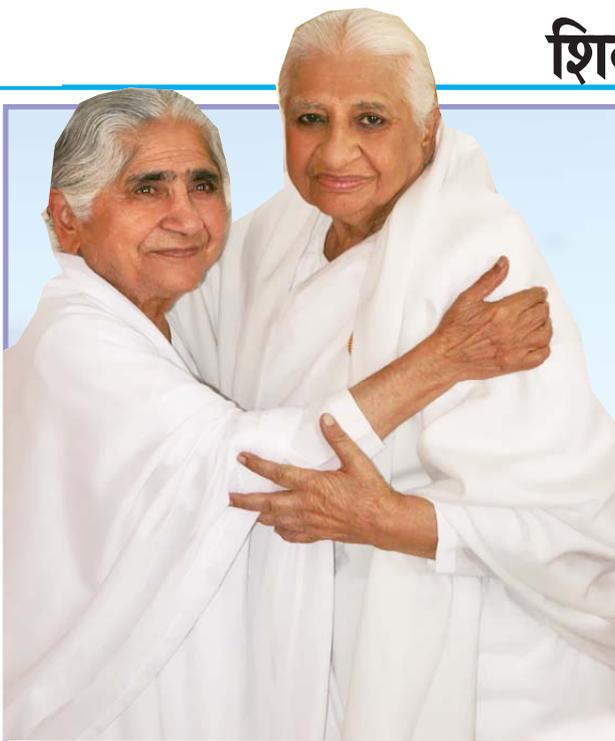
कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमति सोनिया गांधी के साथ दादी



मदर टेरेसा के साथ दादी प्रकाशमणि



ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक पिताश्री ब्रह्मा बाबा के साथ दादी प्रकाशमणि साथ में अन्य सदस्य।



ममता की आंचल में छलक पड़ती आंखें

जिसके फलस्वरूप दिल्ली, अमृतसर, कानपुर, मुम्बई, कोलकाता, पटना, बेंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई।

◆ अध्यात्म की मशाल सरहद पार

राजयोग ध्यान और अध्यात्म की ज्योति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और राजयोग के सिद्धान्तों को उच्च जीवन प्रणाली के लिए सभी को प्रेरित किया। दादी जी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्व विद्यालय की देश-विदेश में हजारों सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। समाज में शान्ति, सद्भावना, धार्मिक समरसता, भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के सराहनीय कार्य के लिए संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गौर सरकारी संस्था के तौर पर आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की तथा युनिसेफ से भी जोड़ा।

◆ डाक्टर की उपाधि

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं देखते हुए, दादी प्रकाशमणि जी को 30 दिसम्बर, 1992 में मोहनलाल सुखाड़िया विवि द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. एम. चेन्ना रेड्डी ने डाक्टर की उपाधि से सम्मानित किया। आध्यात्मिक प्रकाश स्तम्भ दादी जी के सान्निध्य में कारवां बढ़ता गया।

◆ लाखों लोगों की बदली जिन्दगी

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादी जी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशदायी जीवन से लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। प्रेरणादायी जीवन से 46 हजार से भी अधिक बाल ब्रह्मचारिणी बहनों तथा करीब एक लाख से अधिक युवा अपना जीवन समर्पित कर नये समाज के निर्माण में संलग्न हैं। दादी के 11वीं पुण्य तिथि पर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

◆ 30 से ज्यादा देशों में बोया ज्ञान का बीज

दादी जी ने मानवता के इस महान कार्य के लिए विश्व के प्रमुख देशों का भ्रमण कर आध्यात्मिक जागृति की अलख जगाई। संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, यू.ए.ई., केन्या, जिम्बावे, जापान, अर्जेंटीना, कनाडा, आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, बेल्जियम, ब्राजील, कोलम्बिया, रूस, डेनमार्क, फ्रांस, स्वीडेन, स्पेन, स्विटजरलैण्ड, गयाना, ट्रिनिडाड, यूनान, जर्मनी, इटली, आयरलैण्ड, हालैण्ड, सिंगापुर, नेपाल, श्रीलंका आदि देशों में भारतीय संस्कृति का परचम फहराया।

◆ जाति धर्म की तोड़ी दीवारें

दादी प्रकाशमणि जी विभिन्न जाति, वर्ण, रंग-भेद को दूर करने हेतु विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत बनीं। दादी जी ने समाज को कुरीतियों-अंधश्रद्धाओं, व्यसनो एवं तनावों से मुक्ति के लिए अनेक अभियान चलाये। युवाओं, महिलाओं व सर्वांगीण ग्राम विकास तथा आध्यात्मिक जागृति के लिए भारत भर में अनेक कार्याक्रमों को संचालित किया।

◆ अमेरिका में दादी डे

सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गयी, उस समय वाशिंगटन डी.सी. में स्टेट केपिटल बिल्डिंग के सामने तत्कालीन मेयर ने दादी जी के कर-कमलों से वृक्षरोपण कर ओम् शान्ति ट्री नामांकित किया। प्रतिवर्ष 10 जून को प्रकाशमणि दिवस के रूप में मनाने की उद्घोषणा की, जो आज भी यथावत् संचालित है।

◆ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दूत पुरस्कार

दादी जी के नेतृत्व में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय कार्यों के लिए

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि का जैसा नाम था वैसा ही उन्होंने समूचे विश्व में अपने शक्ति और ज्ञान का प्रकाश फैलाया। उन्होंने नारी शक्ति को एक ऐसा साहस व स्वरूप दिया जिसके पदचिन्हों पर चलते हुए एक महिला शक्ति का विशाल कारवां बन गया है। दादी ने दुनिया को यह बता दिया कि नारी समाज में एक महान क्रान्ति की नायिका बन सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग द्वारा नारी ही शीतला, दुर्गा, सरस्वती और सन्तुष्टता की मणी सन्तोषी देवी बन सकती है। अपने अनुपम मूल्यनिष्ठ जीवन, आध्यात्मिक शक्ति एवं प्रशासनिक दक्षता से संस्थान को प्रेम, शान्ति, सत्यता, समरसता, सद्भावना, आत्मिक दृष्टि, वात्सल्य जैसे जीवन मूल्यों को परमात्म शिक्षा और विश्वास से सुसज्जित किया। उनके स्मृति दिवस पर भावमीनी श्रद्धांजलि।

दादी प्रकाशमणि जी का जन्म सन् 1922 में हैदराबाद सिन्ध में हुआ। दादी जी बचपन से ही दिव्य आभा से आलोकित थीं। 14 वर्ष की तरुण आयु में, इस संस्था के संस्थापक के सम्पर्क में आयीं। दादी जी को ज्योति स्वरूप शिव एवं नई सतयुगी दुनिया का साक्षात्कार हुआ जिसमें वर्तमान विश्व का, प्रकृति के प्रकोप, अणु शक्ति, गृह युद्ध आदि द्वारा परिवर्तन भी शामिल था।

◆ ईश्वरीय सेवा में समर्पण

दादी जी बाल्यावस्था में ही स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन की संकल्पना के साथ इस संस्थान की आध्यात्मिक क्रान्ति में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्मुख पूर्ण रूप से ईश्वरीय कार्य में समर्पित कर दिया। निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनीं। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचान कर प्रजापिता ब्रह्माबाबा ने माताओं बहनों का संगठन बनाकर, अपना सब कुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया।

◆ मानवीय मूल्यों की प्रकाश स्तम्भ

इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी के रूप में, स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणा स्रोत बनीं। समर्पित होने के बाद कुछ ही समय के अन्दर, एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाश स्तम्भ बन गयीं। दिव्य बुद्धि से परिपूर्ण, वक्तृत्व कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने उन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा।

आज भी जेहन में ताजा है दादी की यादें

दादी हमेशा माँ की भूमिका में होती थी। प्यार से सबकी पालना करती थी। चाहे वह छोटा हो या बड़ा। उनकी हर बोल व संकल्प कल्याणकारी होते थे। इसलिए दादी रूहानी सेनापति थी। - राजयोगिनी दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू

दादी जी एक शक्ति थी। वे हर कर्म गुणमूर्त होकर करती थी। नारी को कैसे शक्ति स्वरूप बनना चाहिए इसका वे प्रत्यक्ष प्रमाण थी। दादी छोटे से लेकर बड़ों तक सबको रिगार्ड देती थी। - राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका

गुणमूर्त दादी की स्थिति हमेशा समान रहती थी। दुख, सुख, मान अपमान में भी अडिग निसंकल्प रहती थी। सर्व मनुष्यात्माओं के लिए उनकी सोच एक महान व्यक्ति त्व की परिचायक थी। - राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज

दादी प्रकाशमणि जी एक महान नेता थी। उनके साथ रहना माना हमेशा गुणों एवं शक्तियों को अपने जीवन में भरते रहना। उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि जो भी उनके सामने आता था उनका ही होकर रह जाता था। - राजयोगिनी बीके निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज, माउण्ट आबू

विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय दादी जी से सीखने लायक होता था। वे कोई भी कार्य करने से पहले हर किसी से राय करना उनके बेहतरीन गुणों में से था। विज्ञान के साधनों का हमेशा मानव कल्याण के लिए उपयोग के लिए निर्देश देती थीं। - बीके करुणा, प्रकाशक, शिव आमंत्रण, आबू रोड

में जब 16 साल की थी तभी इस वरदान भूमि में आ गयी। दादी ने मुझे उत्तरदायित्व भरे कार्य में व्यस्त कर दिया। दादी केवल कार्य ही नहीं देती बल्कि कार्य क्षमता और साहस तथा कला भी भर देती थी। - ब्रह्माकुमारी सुझी, कार्यक्रम प्रबन्धिका, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, आबू रोड

संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में एक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति पदक तथा दादी को सन् 1987 में शान्ति दूत सम्मान से सम्मानित किया। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी शान्तिदूत पुरस्कार प्रदान किये।

राष्ट्रीय से अंतरराष्ट्रीय हुआ योग और राजयोग का प्रयोग



मेहसाणा
वन संरक्षक पल.जे. परमार, गुजरात जेन की डायरेक्टर बीके सरला, संस्थान के काम विकास प्रभाग के उपाध्यक्ष बीके राजू, महन्त नारायण दास, सरदार हरभजनसिंह के साथ-साथ संस्थान की अन्य वरिष्ठ बहनें तथा अतिथियों दस हजार योगियों के साथ।



जबलपुर
वीरू सिधारी के निर्देशन में संस्थान सदस्यों ने किया योग।



रांची
योग कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर उद्घाटन करते हुए डॉ. आरआर झा - स्नातकोत्तर विभागाध्यक्ष रसायन विभाग, ओंटी मोबाइल एप्लीकेशन के उपाध्यक्ष आर डी सिंह, डॉ. रीन सेन गुप्ता, श्रीव प्रमोद गोयल तथा बीके विमला।



रंजीगढ़
योग दिवस कार्यक्रम में केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री जे.पी.बडुडा, गवर्नर वीपी सिंह बदनौर, प्रशासकीय सलाहकार परमल राय, गृह सचिव अनुमन अग्रवाल, उपायुक्त अजीत बालजी जोशी, संसद सदस्य किरण खेर तथा ब्रह्माकुमारीज सदस्य आदि।



बेतूल
संस्थान के बेतूल सेवाकेंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बीके मन्जू, हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. मनीष लखरे, लघुस वक्त्र के अध्यक्ष परमजीत सिंह बघा, नगरपालिका अध्यक्ष अरवि अरवि, बीके नन्द किशोर।



बैंगलोर
आयुष मंत्रालय, कर्नाटक द्वारा बैंगलोर में विशाल कार्यक्रम हुआ। ब्रह्माकुमारीज को भी आमंत्रित किया गया। संस्थान मुख्यालय से कार्यक्रमी सचिव बीके मरुणुजय, वीवी पुरम, बैंगलोर की जेन इंचार्ज बीके अम्बिका आदि मौजूद थे।

घर-घर जगी अलख



राजकोट

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के अन्तर्गत गुजरात के राजकोट में भी योग दिवस के उपलक्ष्य में रणछोड़दास जी आश्रम ग्राउंड, रतनपुर, टांबा के आर के यूनियर्सिटी और ग्रीन फार्म स्कूल में बड़े स्तर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें रणछोड़दास जी आश्रम ग्राउंड में पूर्व केंद्रीय मंत्री व सांसद मोहन कंडारिया, राजकोट सबजोन प्रभारी बीके के तनवीर 3 हजार योग प्रेमियों ने सामूहिक योग कर वायुमंडल को शक्तिशाली बनाया। रतनपुर, आर के यूनियर्सिटी तथा ग्रीन फार्म स्कूल में बड़ी संख्या में स्कूली बच्चों व युवाओं ने हिस्सा लिया और शारीरिक व्यायाम के साथ मानसिक व्यायाम द्वारा तन मन को स्वस्थ बनाने की कला सिखी।

योग की रुकावटें निकालता है शाकाहारी भोजन

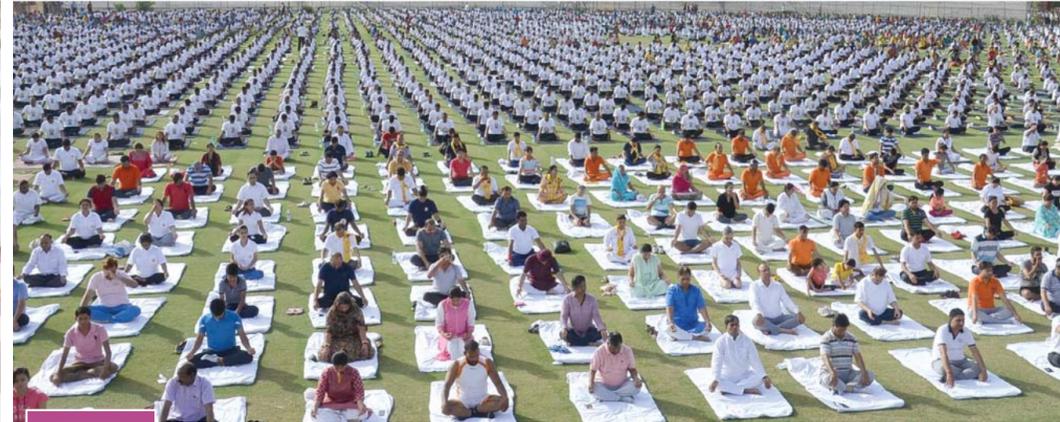


शिव आमंत्रण, कांढीवली। होलिस्टिक हेल्थ गुरु मिक्की मेहता ने मुंबई के कांढीवली में शाकाहारी भोजन के फायदे बताने के साथ स्वस्थ रहने की युक्तियां सिखाई तो बोरिवली सबजोन प्रभारी बीके दिव्यप्रभा ने भी योग और राजयोग के समन्वय की बात कही। इस अवसर पर मिक्की मेहता ने कहा, शाकाहारी भोजन से योग की सब रुकावटें निकल जाती हैं। अब विहार माना व्यायाम वा कसरत का योग। कसरत का मतलब कस के रत लगाना। वह जानवरों की तरह नहीं होनी चाहिए। शांतिपूर्वक, अमनपूर्वक इन्सानों की तरह करें। इट शूड बी अ सेलिब्रेशन। योग करने से मजा आना चाहिए। इस से वात-पित्त-कफ संतुलित होता है। कार्यक्रम का शुभारंभ विशिष्ट अतिथि समेत मैराथन और एरोबिक्स ट्रेनर बिंदू पांचाल, बीई एस टी के चेयरमैन अनिल कोकिल ने दीप जलाकर किया। बीके संगीता ने भी योग पर चर्चा की। अंत में अतिथियों को सम्मानित किया गया व मनोरंजक ढंग से फिजिकल व मेंटल एक्सरसाइज कराई गई।

सशक्तिकरण का बेहतर माध्यम है योग



शिव आमंत्रण, फरुखाबाद। ब्रह्माकुमारीज संस्थान बीबीगंज शाखा के वार्षिकोत्सव में मुख्य अतिथि एसपी दयानंद मिश्र ने कहा, कि आज के समय में बढ़ते तनाव को युवा पीढ़ी बर्दाश्त नहीं कर पा रही है। यही वजह है कि ज्यादातर युवा नशे की चपेट में आते जा रहे हैं। योग इससे बचाव का बेहतर माध्यम है। सेवाकेंद्र चालिका बीके मंजू ने योग के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि स्वामी शिवकानन्द ने अपनी पुस्तक में बताया है कि हर आत्मा का अपना अस्तित्व है और राजयोग के माध्यम से हरेक अपनी प्रतिभाओं में निरखार ला सकते हैं।



जयपुर

सवाई मान सिंह स्टेडियम में सरकार द्वारा योग शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, चिकित्सा मंत्री कालीचरण सराफ, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष अशोक परनामी, सांसद दुर्गंत सिंह व ब्रह्माकुमारीज के हजारों सदस्य व कई मंत्री तथा भाजपा के पदाधिकारियों समेत लगभग 45 हजार लोग मौजूद थे। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कहा, कि अब योग गांव-गांव में पहुंच गया है जिसके कारण लोगों के स्वास्थ्य में बेहतर बदलाव आ रहा है। जयपुर सबजोन प्रभारी बीके सुपमा, वैशालीनगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके चंद्रकला ने भी अपने वक्तव्य से सभी को योग के साथ राजयोग के महत्व से अवगत कराया तथा उपस्थित अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट की।

लातूर में उठाया दस हजार लोगों ने योग का लाभ



शिव आमंत्रण, लातूर। महाराष्ट्र में ब्रह्माकुमारीज के लातूर सेवाकेंद्र ने योग दिवस को उमंग-उत्साहपूर्वक मनाया जिसका दस हजार लोगों ने लाभ उठाया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व गृहमंत्री शिवराज पाटिल, लातूर जिला अधिकारी जी. श्रीकांत, लातूर पुलिस अधीक्षक डॉ. शिवाजी राठोड, जिला आयुष अधिकारी डॉ. बनसेलकीकर सुधीर, डॉ. सुनील गायकवाड, पतंजलि योग समिति के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष विष्णु भूतडा, शिक्षाधिकारी नजीर शेख, जिला आरोग्य अधिकारी डॉ. संतोष नवले, महापौर सुरेश पवार, सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नंदा, बीके पुण्या और अन्य योग संस्थाओं के प्रतिनिधि थे। कार्यक्रम का संचालन बीके पुण्या ने किया। पूर्व गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने कहा, देश में योग का ज्ञान जितना होगा चाहिए उतना नहीं है। इसके लिए हमें एकजुट होकर इसका प्रचार-प्रसार करना होगा। जनजागृति के लिए मोटरसाइकिल रैली का भी आयोजन किया था।

योग को अपनी जीवनशैली बना लो : विजय गोयल



शिव आमंत्रण, नई दिल्ली। आयुष मंत्रालय के सहयोग से संस्थान द्वारा सिरोफोर्ट सभागार में योग एक स्वस्थ जीवन शैली" कार्यक्रम का आयोजन हुआ। युवा एवं खेल के केन्द्रीय राज्य मंत्री विजय गोयल ने कहा, कि योग केवल व्यायाम तक ही सीमित न रह जाये, अतः इसे हम अपनी जीवनशैली बना लें। योग को खेलों में शामिल करने का प्रस्ताव आया है, परन्तु योग को हम खेलों की तरह प्रतियोगिता नहीं बना सकते। योग शरीर व मन दोनों के सन्तुलन के लिए जरूरी है, इसलिए योग को विद्यालयों में लागू करना आवश्यक है। भारत एवं भूटान में संयुक्त राष्ट्र संघ के निदेशक डक सींगर ने इस उपलक्ष्य पर कहा, कि योग भारत की समग्र विश्व को अनमोल भेंट है। योग शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। योग गुरु डॉ. एच. आर. नागेन्द्र, मंत्रालय के उप सचिव अमृतमन शर्मा, डीआरडीओ के अध्यक्ष डॉ. ललित कुमार, संस्थान के रशिया स्थित सेवाकेंद्रों की निदेशिका बीके चक्रधारी, मुख्य प्रवक्ता बीके बृजमोहन, एम्स में कार्डियो व ऐनेस्थीसिया की प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. उषा किरण, जी.बी.पन्त अस्पताल के प्रोफेसर एवं कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. मोहित गुप्ता, बीके रमा मुख्य रूप से उपस्थित थे। सायंकालीन सत्र में सांसद मिनानी लेखी, सांसद रमेश बिष्टुरी तथा ब्रह्माकुमारी के आभ्यान्वित टिट्टे सेन्टर, गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी आशा ने अपने विचार रखे।

पौड़ी गढ़वाल



जिला पंचायत भवन पौड़ी में संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मंचालीन मुख्य अतिथि अर्धप्रसन्न दिव्य जोषवन्दे, बीके मेहरचन्द, कर्नाल, गुजरात के पूर्व विधायक मोहन पटेल, बीके सरिता तथा अन्य।

सारनाथ



वासनाजी जेन की निदेशिका बीके सुरेन्द्र केन्द्रीय रेल एवं संचार मन्त्री मन्मोज सिन्हा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए। साथ में है एमरल्ड रविन्द्र जयसवाल।

सारनी



उद्घाटन करते हुए नगरपालिका उपाध्यक्ष भास्कर माकोडे, भारतीय स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया सारनी के प्रबन्धक अनिल स्वामी, भाजपा मंडल अध्यक्ष बंडू माकोडे, बीके सुविता तथा अन्य अतिथियों।

सुल्तानपुर



सेवाकेंद्र पर आयोजित योग कार्यक्रम में उपस्थित सुल्तानपुर के विधायक सूर्यमान सिंह को सौगात भेंट करते हुए बीके अशा।

जोशीयाड़ा



उत्तरकाशी के जोशीयाड़ा में आयोजित कार्यक्रम में मंचालीन है विरिष्ठ अतिथि कथा वक्ता रविन्द्र प्रसाद सेमवाल, उत्तरकाशी व्यापार मंडल के महामंत्री अशोक उषाल, बीके सरिता तथा अन्य।



पटियाला
योग दिवस पर उपस्थित अतिथियों को सौगात देती हुई बीके बहनें।



पलवकड़
केरल के पलवकड़ में योगप्रयास करते बीके भाई-बहनें।



इंदौर
ब्रह्माकुमारीज के सानिख्य में श्री वैद्यपट्टि स्कूल द्वारा पर्यटन परिसर में हुए कार्यक्रम में बच्चों ने योगप्रयास किया।

ब्रह्माकुमारीज के सानिख्य में श्री वैद्यपट्टि स्कूल द्वारा पर्यटन परिसर में हुए कार्यक्रम में बच्चों ने योगप्रयास किया।



पणजी-गोवा
सभा को सम्बोधित करते हुए बीके शोभा, साथ में मंचालीन है पतंजलि योग समिति सदस्य, वेदरु युवा केंद्र सदस्य व अन्य।



कामठी
महाराष्ट्र के कामठी सेवाकेंद्र में कृषि उत्पादन बाजार समिति सभापति हनुमन्त अमरे, पंचायत समिति सदस्य विमलनाई साबडे, नागपुर जिला भाजपा उपाध्यक्ष नेमचंद बाबनकरने, पन्थासन चकोले तथा बीके प्रेमलता।



छतरपुर
मध्य प्रदेश की महिना एवं बाब विकास राज्य मंत्री ललित यादव, जिला कमेन्टर रमेश भण्डारी, एसपी ललित सक्कार, बीजेपी जिला अध्यक्ष पुष्पेन्द्र प्रताप सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष अरुण सिंह, एस्डीएम डी.पी. द्विवेदी, बीके रैलजा, बीके माधुरी, बीके रीना सहित अन्य गणमान्य।

प्रसन्नता भौतिक वस्तुओं पर निर्भर नहीं



जीवन प्रबंधन

सुरेश ओबेरॉय: बाहरी बातें मुझे भीतर से व्याकुल और बेचैन क्यों बना देती है?

सिस्टर शिवानी : यह चुनाव की बात है। क्या यह बाहरी चीजें सबको समान रूप से बेचैन करती है? कोई व्यक्ति असफलता का सामना करते हुए अवसादग्रस्त होगा, कोई आत्महत्या कर लेगा और कोई यह भी तो कह सकता है, सब ठीक है, मैं इसे फिर से करने जा रहा हूँ। वह अगली बार सफल हो जाता है। असफल तो वही है परंतु इसकी प्रतिक्रियाएँ अलग-अलग हैं।

यही वजह है कि हमारी भावनाएँ और हमारी सोच, हमारे अपने हाथों में ही हैं। केवल यह जान लेने से आपका जीवन बदल सकता है।

सुरेश ओबेरॉय: जब कोई घटती है और आप प्रतिक्रिया देते हैं, तो उस समय अपने-आप को यह कहने का समय कहाँ होता है, देखो, यह एक सोच है, परिस्थिति बाहर है.... सोच आंतरिक चुनाव है। हमारे पास प्रतिक्रिया चुनने का समय ही कहाँ है?

सिस्टर शिवानी: ऐसा इसलिए है क्योंकि हम अपने जीवन को स्वचालित तरीके से जी रहे हैं। आप जानते हैं कि एक मशीन इसी तरह काम करती है। एक मशीन और एक इंसान में क्या अंतर है? एक मशीन के पास कोई चुनाव नहीं होता-ह्र्दो, इसे बार-बार चलाते हैं और बार-बार बंद करते हैं। यह मशीन चालू हो जाती है। आप बटन बंद करते हैं, मशीन काम करना बंद कर देती है। इंसानों के पास चुनने की सुविधा है। कोई मेरे पास आता है, और मुझे कुछ कह देता है- मानो उसने कोई बटन दबा दिया हो अगर मैं कोई मशीन हूँ तो मैं कहेूँगी, मुझे गुस्सा आना तो स्वाभाविक है। स्वाभाविक कैसे है? मशीन के लिए यह स्वाभाविक है क्योंकि वो स्वचालित तौर पर काम करती है।

सुरेश ओबेरॉय : यह भी तो सच है न कि केवल कुछ साधु-संतों और खास लोगों को छोड़ कर, बाकी सब लोग तो इसी स्वचालित तरीके से ही अपना जीवन बिता रहे हैं।

सिस्टर शिवानी: नहीं, यह बात केवल संतो के लिए नहीं है। आपको इस बात के प्रति जागरूक रहना है कि हम इंसान हैं। लोग बटन दबा रहे है परंतु हमारे पास चुनने का विकल्प भी है।

सुरेश ओबेरॉय : आप परिहिन जो ध्यान करती हैं, उसके बारे में कुछ कहें। संभवतः इसी ध्यान के अभ्यास के बल पर आप बेहतर तरीके से समझ पाती हैं कि बाहर की दुनिया में जो घट रहा है या हम अपने भीतर जो रचते हैं, उनमें क्या अंतर है? कोई व्यक्ति आपकी तरह ध्यान का अभ्यास कर सकता है? प्रायः लोग यही समझते हैं कि ध्यान का मतलब है, एक कोने में बैठे जाओ और कुछ भी सोचना बंद कर दो। लोगों के लिए यह सब करना कठिन है। उनके लिए तो इसे

एक क्षण के लिए भी करना मुश्किल है। क्या आप इसे हमारे लिए थोड़ा सरल, थोड़ा आसान बना सकती हैं?

सिस्टर शिवानी: मैं आपको एक बहुत सीधी-सी बात बताना चाहती हूँ: ध्यान का अर्थ आपकी चिंतन प्रक्रिया को रोकना नहीं है, बल्कि आपको इस बारे में सजग होना होगा कि आप क्या सोच रहे हैं और यह चुनाव करना होगा कि आप आगे क्या सोचेंगे।

सुरेश ओबेरॉय: तो मुझे इस बात का ध्यान रखना होगा कि मैं क्या सोच रहा हूँ...

सिस्टर शिवानी: मैं तो इस बारे में सजग नहीं हूँ। **सिस्टर शिवानी:** आप किसी स्वचालीत तरीके से नहीं बोल रहे।

आप यह चुनाव करते हैं, कि आपको क्या बोलना चाहिए। आप चुनते हैं कि आपको क्या करना चाहिए-कब बैठना है, कब चलना है, कब सोना है। हम अपने कर्म और शब्दों का चुनाव कर रहे हैं। बेशक, कई बार विचार इतनी तेजी से सामने आते हैं कि हमें लगता है कि शब्द अपने-आप ही मूँह से निकल गए, और हम कहते हैं, मैं ऐसा कहना नहीं चाहता था। अब एक कदम आगे बढ़ते हुए, हमें लगता है कि शब्द अपने-आप ही मूँह से निकल गए, और हम कहते हैं, मैं ऐसा कहना नहीं चाहता था। अब एक कदम आगे बढ़ते हुए, हमें सिर्फ अपने बोल नहीं बल्की अपनी सोच के बारे में भी सजग होना होगा कि हम क्या सोच रहे हैं। जब हम अपने विचारों को चुनेंगे तो हमारे लिए अपनी प्रतिक्रिया का चुनाव करना भी सरल होगा। हम प्रतिदिन सुबह, यह सरल फि या कर सकते हैं और दिन में किसी भी समय कर सकते हैं - बस, आपको अपने विचारों के प्रति सजग रहना है।

विश्रांत होकर इन विचारों पर मनन करें
अपने मन में उठ रहे विचारों को देखें... यह आपके काम, आपके मित्रों, आपके परिवार या आपके बारे में हो सकते हैं। अपने विचारों को देखें... आज के अपने पुरे दिन को देखें... मैं सुबह काम पर जाता हूँ, वहाँ लोगों से बातचीत करता हूँ...

मैं हर काम करते हुए यह चुनाव कर रहा हूँ, कि मुझे क्या काम करना चाहिए। और यह चुनाव भी करता हूँ कि मुझे हर कार्य करने के दौरान किस स्थिति में रहना है...

मैं जो भी काम बाहरी तौर पर कर रहा हूँ, मेरे पास विकल्प है कि मैं उसके लिए कैसा महसूस करता हूँ... हालात, लक्ष्य, लोग-ये सब बाहरी है... अब मुझे खुद को देखना होगा : मैं कैसे सोचता हूँ, मैं कैसे काम करता हूँ, मैं क्या महसूस करते हुए अपनी प्रतिक्रि या देता हूँ... यह मेरा अपना चुनाव है... मैं स्वयं ही अपनी प्रतिक्रिया को रचता हूँ।...

समस्या-समाधान



प्रश्न: जो लोग शिखर पर पहुँचते हैं हमने लगता है सहज ही शिखर पर पहुच गये हैं लेकिन कितनी तकलीफ, कितनी कठनाईयों उनके जीवन में होता है।

उत्तर: सबसे बड़ा कठनाईयों हमें दुसरो के कमेंट सुनकर होता है मनुष्य हर जगें वो घर मे अकेला बैठ सकता है। लेकिन हारने के बाद जो लोग उनको कमेंट करते है उनको चुनना बहुत कठिन होता है। लेकिन ऐसे ही पॉजेटिव हो जाना लोग मुझ पर हँसते थे उसने उसको बिलकुल पॉजेटिव बना लिया, अपना प्रेरणा बना लिया। मे हार गया तो लोग क्या क्या कहते थे। मुझे कोई प्यार नहीं क्या करता था। जरूर उसने सोचता होगा कि मैं सबका प्यार जीतूंगा। लोगों ने मुझे अकेला छोड़ दिया लेकिन मैं अकेला रहकर कुछ ऐसा काम करे कि सारा संसार मे पिछे आ जाए।

तो दुसरो के प्रति कमी को उसके प्रति लोगों ने दिखाई इसने इसे महानताओं मे बदल दिया। ऐसे ही हम भी हर कमजोरी को शक्ति मे बदल दें। तो सचमुच हमें सफल होने से कोई नहीं रोक सकेगा। आज कल बहुत युवकों की एक बात सामने आती है कि बहुत जल्दी निराश हो जाते है। बात तो सही है कि अच्छी डिग्री मिल जाने के बाद भी उसको जॉब नहीं मिलती है तो मन मे निराशा होती है, लोग बोलते है, एक तो युवको को ये करना चाहिए कि कोई भी डिग्री मिल जाने के बाद खाली न रहे कुछ करने लगे। जो भी मिले उस जॉव को अपना लेना चाहिए फिर आगे बहुत सारे ऑप्शन होते है। मनुष्य को नये मार्ग मिलते है उसको योग्यताएं बढ़ाने का अच्छा अवसर भी मिलता है तो सफलता के मार्ग मे चाबी यही है कि हम अपने आशाओ को खोये नहीं, हम अपनी मेहनत को छोड़ न दे। बिलकुल उम्मीद रखे कि हमे वहाँ पहुँचना ही है

सूचना	
सामाजिक सेवाओं तथा आन्तरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकला गया मासिक शिव आमंत्रण समाचार पत्र एक सम्पूर्ण अखबार है। जिससे आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है। यही हमारी ताकत है।	
वार्षिक मूल्य	: 90 रुपये
तीन वर्ष	: 260 रुपये
आजीवन	: 2200 रुपये
पत्र व्यवहार का पता	
संपादक: ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन-307510, आबू रोड- 307510, जिला-सिरोही, राजस्थान	
मौ.8769830661, 9413384884	
Email: shivamantran@bkiv.v.org, kkomal@gmail.com	

अपनी कमजोरियों को शक्ति में बदलो

और हमेशा मन को पोजिटिव रखें। तो सफलता हमारे चरण चुमेगी अवश्य। **प्रश्न:** कई बार ऐसा होता है जब चारों तरफ ये कमेंट आ रहे होते या हमें लोग ये कहते हैं कि तुम ये नहीं कर सकते ऐसे मे अपने आप को जागृत रखना या सकारात्मक रखना कई बार थोड़ा सा कठिन हो जाता है।

उत्तर: हों ये तो कठिन है लेकिन मनुष्य को एक चीज करनी होगी इसमें पहले से जो बहुत निगेटिव है, पहले से जो बहुत सोचते रहे, पहले से जो अपने मन की शक्ति यों पर ध्यान नहीं दिया जब उन्हें ये परिस्थितियां फेश करनी पड़ती है तो उनके सामने ये सब होता है वे निराश होते है, उदास होते है, डिप्रेशन मे जाते है। लेकिन जिन लोगो ने बचपन से कुछ चीजों को अपने साथ कायम रखा। मान ले सिद्धांत बनाकर चले हमें तो सफल तो होना है अगर असफल हो गये तो भी और उम्रंग उस्ताह से आगे बढ़े। कहीं कहीं गलती हुई उसे सही करते हुए आगे बढ़े। जिन्होने पहले से ही अच्छी यात्रा चालु रखी है अपने को निगेटिव नहीं होने दिया, बहुत चीजों के अधीन नहीं हुए। ऐसे लोग जब ऐसी स्थितियों से गुजरते है तो उसको हिम्मत पूर्ण उसे पार कर लेते है। आशावादी बने रहते है डिप्रेशन, उदासी उनके द्वार पर नहीं आती है।

प्रश्न: कई बार जब हम पराजित होते है तो अपनी लक्ष्य पर एकाग्रह रहने कि जो खुद की आशा और विश्वास है उसे हम कहीं न कहीं खो देते है। ऐसे क्यो होता है।

उत्तर: ये सब खुद से ही होता है ये सब कुछ, अगर मनुष्य खुद को बहुत श्रवत बना कर रखे सप्रिचुलटी हमे यही तो सिखाती है हम खुद को बहुत श्रवत बनाये आशावादी बने, बहुत कॉफिटेन्ट करे अपने को, अपने आत्मविश्वास को खोने न दे और कुछ अच्छी प्रैक्टिस करेगें तो बहुत अच्छे रिजल्ट आयेगे।

प्र.राजयोग का अभ्यास कहाँ-कहाँ किया जाए कहाँ-कहाँ नहीं किया जाए इस पर प्रकाश डालें।

उत्तर : किसी को जॉब लेनी है, किसी को अच्छे अंक लेने है, किसी सर्विस मे अच्छे प्रमोशन लेने है और सफलता का जो फिक्ट है मनुष्य को हर जगह सफलता चाहिए उसमें जो राजयोग का जो प्रयोग है काफी कारगर सिद्ध होते है। परिवारिक जीवन है उसमें कुछ समस्याएं चल रही है किसी की प्रोपर्टी की समस्याएं चल रही है, किसी को कोर्ट केस की समस्या रही है, जिनको हम किंग कहते है परिवारो मे उसमे राजयोग का प्रयोग बहुत ज्यादा सफल होते है। बिमारीया चल रही है जिसको असाध्य रोग कहते है निंद नहीं आ रही है, कैसर जैसा हो गया है उसमें राजयोग का प्रयोग बहुत ज्यादा मदद करता है।

ईश्वरीय संदेश अब ओम शांति चैनल गॉडलीवुड पर



आवश्यकता अनिष्कार की जननी होती है। सच न आ प्रौद्योगिकी के युग में कम समय में परमात्मा का संदेश देने तथा नये विश्व निर्माण के लिए गॉडलीवुड स्टूडियो की ओर से टेलीविजन से इतर इंटरनेट की दुनिया में मंगल प्रवेश हो गया है। अब यूट्यूब ओम शांति चैनल गॉडलीवुड का शुभारम्भ हो गया है। जिसकी नींव चार वर्ष पहले ही स्टूडियो के पूर्व चेयरमैन रमेश भाई के द्वारा रख दी गयी थी। अब आप स्टूडियो में बनने वाले हर प्रकार के कार्यक्रम जैसे कि एक मुलाकात, समाधान, पीस न्यूज समेत सभी प्रकार के कार्यक्रम कहीं भी और कभी भी देख सकते है। अब तो बस एक बटन दवाईये और आपको सब कुछ दिखने लगेगा। यही नहीं आप देश और अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय में होने वाले सभी प्रकार के कार्यक्रम का लाईव देख सकते हैं।

www.omshantichannel-godlywood

सबसे पहला कदम है कि यह भीतर की यात्रा है



बीके उषा, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, माउंट आबू

भीतर की यात्रा से तात्पर्य है स्वयं का चिन्तन करना। स्व चिंतन आर्थात आत्मा-चिंतन से ही हम मन को आत्मा भाव में स्थित करते हैं। जैसे कोई भी यात्रा प्रारम्भ करने लिए एक प्रस्थानबिंदु की आवश्यकता होती हैं। वैसे आत्मचिन्तन मन को परमात्मा चिन्तन की ओर ले जाता है और परमात्मा अनुभूति में एकाग्र करता है।

हम चाहते हैं कि हमारा मन परमात्मा की याद में सहज एकाग्र हो परन्तु मन के अन्दर अनेक प्रकार की बातों की हलचल रहती है अथवा कारोबार सम्बन्धी इतने विचार दौड़ते हैं कि मन शान्त होना का नाम ही नहीं लेता। ऐसा आशन्त मन, ईश्वर की तरफ कैसे जाएगा?

यूं समझें इसे

एक व्यक्ति ने सोचा कि वह रात में ही यात्रा करके अपनी मंजिल पर पहुँच जाए तो अच्छा है। वह नहीं किनारे गया, एक छोटी सी नाव में या आत्मा स्वरूप में अपने आपको स्थित करेंगे तब हम इस यात्रा पर आगे बढ़ सकेंगे। तभी तो भगवान ने श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन को भी यही कहा कि तुम स्वयं को आत्मा निश्चय करो। भाव यह है कि हमें सदा यह स्मृति रखनी है कि मैं यह



मन और बुद्धि में हो सामंजस्य

ठीक इसी प्रकार अगर हम अपने मन और बुद्धि का लंगर देह और देहधारियों की बातों, देह के कारोबार की बातों में फँसा कर रखेंगे और आपने मन को परमात्मा की ओर ले जाना चाहेंगे तो यह संभव नहीं हैं। इसलिये अपने मन को सभी बाहरी बातों से विरत करके आत्मा-भाव में या आत्मा स्वरूप में अपने आपको स्थित करेंगे तब हम इस यात्रा पर आगे बढ़ सकेंगे। तभी तो भगवान ने श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन को भी यही कहा कि तुम स्वयं को आत्मा निश्चय करो। भाव यह है कि हमें सदा यह स्मृति रखनी है कि मैं यह

सम्पूर्ण स्वास्थ्य की संजीवनी है राजयोग

शिव आमंत्रण, मुम्बई, भांडुप वेस्ट। योग दिवस के उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित योग कार्यक्रम में राजस्थान की पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्रीमति दीपा ने भी शिरकत की। संस्थान के सेवाकेन्द्र से बीके



दीप प्रज्वलन करते शक्तिराज और अतिथि।

अतः ऐसे समय में हमें अपने विचारों पर नियन्त्रण तथा उन्हें उचित दिशा देने हेतु राजयोग का अभ्यास जरूर करना चाहिए। उन्होंने अंत में कहा, कि राजयोग ही सम्पूर्ण स्वास्थ्य की संजीवनी है तथा वैतिक मूल्यों से जीवन को सजाने-सँवारने का निचोड़ भी। कार्यक्रम के दौरान मुम्बई के सांसद किरीट सोमैया, सेवाकेन्द्र संचालिका बीके लाजवंती सहित सैकड़ों वीआईपीज ने भाग लिया।

पर्यटन मंत्री को कराया राजयोग से अवगत

शिव आमंत्रण, भरतपुर। पुलिस फेड ग्राउन्ड, भरतपुर में संस्थान द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित योग कार्यक्रम में राजस्थान की पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्रीमति दीपा ने भी शिरकत की। संस्थान के सेवाकेन्द्र से बीके



पर्यटन मंत्री को राजयोग के बारे में जानकारी देतीं बहनें।

मासिक समाचार पत्र भी भेंट किया गया। इस दौरान संभागीय आयुक्त सुवीर वर्मा, पुलिस महानिरीक्षक आलेक विशिष्ट, आईपीएस एन.के. गुप्ता, जिला कलेक्टर, मेयर शिवसिंह भोंट तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे।



शांति और सद्भावना के इजहार करते- राखी के दो तार

अविनाशी आत्मा के मन में उत्कर्ष की असीम संभावनायें है। मन की उड़ानों को रक्षाबन्धन जैसे पावन सूत्रों में बांधकर नर को नारायण जैसा सतोप्रधान बनाया जा सकता है

बंधन किसी भी व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने तथा उसे सुचारू रूप से चलाने में सहायक होता है। चाहे वह मर्यादा, प्यार, अहिंसा अथवा सामाजिकता का बंधन हो। परन्तु सभी का मकसद एक ही होता है व्यवस्थाओं अथवा संरचना को यथावत बनाये रखा जाये। मन के चंचल उड़ानों को शांतिदायिनी और सद्भावना-युक्त बनाने के लिए ही राखी का पर्व बनाया गया है। राखी एक रूहानी पर्व है इससे ही मानव संसार सागर की तमाम हलचलों में से अमृतमय सम्बन्ध ढूँड पायेगा। जैसे असीम जल राशि वाले समुन्द्र के तटबन्धों के सहारे बहुतेरे लाभ उठाये जाते। सर्जन नहीं समझता, लेकिन जब वह डॉक्टर या सर्जन अपने ध्ववसाय के स्थान पर जाने के लिये सुबह-सुबह तैयार होता है तब वह उस स्मृति में स्वाभाविक आ जाता है कि मैं डॉक्टर हूँ। उस समय उसको अस्पताल, मरीज दवाईयां, ऑपरेशन आदि ही याद आएगा क्योंकि अब वह उस भाव में स्थित है, उस समय उसको अपने बच्चों की याद नहीं आती.....क्रमशः

प्यार के बन्धन को समाज व सामाजिक संविधान द्वारा रक्षा-बन्धन के रूप में सम्पूर्ण संरक्षण व परिपोषण दिया जाना चाहिए। मन में उत्कर्ष की असीम संभावना समुद्र पार कर लेना, एवरेस्ट पर चढ़ जाना, कांटों की शै्या पर सोये रहना सरल है पर मन को एकाग्र करके लोक मंगल में जोड़ना ? परन्तु पौराणिक कथानकों के अनुसार रक्षा सूत्रों को लोग नारी संरक्षण का ही प्रतीक मानते हैं। जैसे फिरोज शाह द्वारा नागौर किले की घेरा-बंदी क्रिये जाने पर राजा मानसिंह की पुत्री पन्ना द्वारा उम्मेद जल राशि वाले समुन्द्र के तटबन्धों के सहारे बहुतेरे लाभ उठाये जाते। सर्जन नहीं समझता, लेकिन जब वह डॉक्टर या सर्जन अपने ध्ववसाय के स्थान पर जाने के लिये सुबह-सुबह तैयार होता है तब वह उस स्मृति में स्वाभाविक आ जाता है कि मैं डॉक्टर हूँ। उस समय उसको अस्पताल, मरीज दवाईयां, ऑपरेशन आदि ही याद आएगा क्योंकि अब वह उस भाव में स्थित है, उस समय उसको अपने बच्चों की याद नहीं आती.....क्रमशः

रहते तो उच्च धारणाओं द्वारा उनकी रक्षा स्वतः होती रहती है। नहीं तो विकारों से जकड़ा हुआ जीवन, यमराज की यातनाओं से टूट नहीं सकता। बहनों द्वारा बांधे जाने वाले कच्चे धागों के बन्धन तो मात्र प्रतीक हैं। **पावनता का प्रतीक राखी**
कलियुग व सतयुग के सन्धिकाल पर ईश्वरीय शिक्षायें धारण कर माताओं-बहनों ने दूसरों को भी पावनता के पथ का पथिक बनाया है। मनुष्य को विषय-विकारों से मुक्त करने के कारण ही तो इसे विष-तोड़क पर्व भी कहा जाता है। कलिकाल में रस्म-रिवाज बस राखी मानते हुए लोग और ही पतन के गर्त में गिरते जा रहे हैं। जबकि रक्षा-बन्धन सर्वोच्च जीवन जीने के लिए पावनता का बीड़ा उठाने के लिए मनाये जाने वाला अति महान पर्व है। इसी के द्वारा आत्मा-आत्मा भाई-भाई की वृत्ति से राजयोग जैसी ऊँचे पढ़ाई पढ़ी जा सकती है। इस आध्यात्मिक ज्ञान-ज्योति से ही स्वयं प्रकाशित हो हम कुल-दीपक बन जग का अंधियारा मिटाने के भी निमित्त बन सकते हैं।

जवानों ने सीखा तनाव प्रबन्धन

शिव आमंत्रण, बाद। तनाव प्रबंधन एवं खुशहाल जीवन को लेकर पनटीपीसी सुपर थर्मल पॉवर प्रोजेक्ट के केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल केन्द्र में कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस दौरान



जवानों को ईश्वरीय सौगत प्रदान करते हुए बीके बहने ।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान के बाद सेवाकेन्द्र से बीके ज्योति तथा बीके डेजी ने पुलिस कर्मियों तथा उनके परिजनों को तनाव कम करने के टिप्स देने हुए कहा कि भौतिकवादी संस्थाधनों को हारिल करने का जुबून लोगों को तनाव वैचारिक संतुलन बनाए रखने की जरूरत होती है। कार्यक्रम के दौरान पनटीपीसी का शिकार बनाता जा रहा है। मनुष्य की धर्मेन्द्र सिंह चाहर, सहायक कमांडेंट सुब्रत ले लेती है। अतः हमें चाहिए कि हमारे पास जो भी साधन है हम उनका उचित और आवश्यक उपयोग करते हुए मानसिक

स्थिरता बनाए रखें। उन्होंने कहा कि सामाजिक और परिवारिक जीवन के कोहरे पाट में चलने वाले पुलिसकर्मियों को वैचारिक संतुलन बनाए रखने की जरूरत होती है। कार्यक्रम के दौरान पनटीपीसी का शिकार बनाता जा रहा है। मनुष्य की धर्मेन्द्र सिंह चाहर, सहायक कमांडेंट सुब्रत ले लेती है। अतः हमें चाहिए कि हमारे पास जो भी साधन है हम उनका उचित और आवश्यक उपयोग करते हुए मानसिक

सोलापुर के वाह जिंदगी कार्यक्रम में स्वामीनाथन के विचार जो कुछ भी करे खुशी से, आनंद से करे



शिव आमंत्रण ■ सोलापुर

महाराष्ट्र में सोलापुर के हुतात्मा स्मृति मंदिर में शहरवासियों के लिए आयोजित वाह जिंदगी वाह कार्यक्रम में शहर के नगर आयुक्त डॉ. अविनाश ढाकाने, पुलिस आयुक्त एम.बी. टाम्बडे, इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. यशश्री जोग, सोलापुर सबजिन प्रभारी बीके सोमप्रभा समेत शहर के गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर मुंबई से आए कॉर्पोरेट ट्रेनर प्रोफेसर ई.बी. स्वामीनाथन ने बताया, कि जैसी व्यक्ति की स्मृति होती है वैसी



श्रीप फज्जवलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि एवं उपस्थित जनसमूह।

उसकी स्थिति बन जाती है। इसलिए हमेशा स्मृति में रखें कि मैं शांत स्वरूप, प्रेमस्वरूप, शक्ति स्वरूप आत्मा हूँ जिससे आपकी स्थिति अच्छी रहेगी और आप सहजता से हर परिस्थिति को पार कर लेंगे। उन्होंने कहा, जीवन में जो कुछ भी करे खुशी से करे, आनंद से करे। बहोत सारे फॉर्म्युला, इक्रेशन्स को पढ़ना शिक्षा नहीं है। बट इट इज द

एन्लायटन द लाईट विदिन। भूकुटी के बीच जो दिखता नहीं वह चैतन्य शक्ति आत्मा है। अपने आप को शरीर समझकर चलेंगे तो स्थिति ऊपर- नीचे होती है। लेकिन हम जैसे ही आत्मा समझने लगते हैं तो फिर वह शांतस्वरूप, प्रेमस्वरूप, शक्तिस्वरूप स्थिति बनने लगती है। शरीर मोबाईल, आत्मा सीम। अब घर जाने के बाद मां को बच्चा

पूछेगा, कि मां आप का चेहरा आज इतना खिला हुआ क्यों है? तो आप बोलो, स्वामीनारायण के क्लास में गये थे, वहाँ हमारा सीम ऑक्टिवेट हो गया। फिर आप उसके सरपर हाथ रखो और आत्मिक स्वरूप में उसको देखो तो उसकी बॅटरी भी चार्ज हो जायेगी, वह खुश हो जायेगा। उन्होंने अंत में कमेंट्री द्वारा राजयोग का अभ्यास भी कराया।

आज का युवा ला सकता है धरती पर स्वर्ग: डॉ. आदिती



मेमोरी ट्रेनर आदिती सिंघल और कार्यक्रम का सुची ने लाभ लेते बच्चे।

शिव आमंत्रण, नागपुर। आज का युवा यदि अपने मन को सबल कर ले तो क्या नहीं कर सकता। वह इस धरती को स्वर्ग बना सकता है।

उक्त विचार दिल्ली से आयी इंटरनेशनल मेमोरी ट्रेनर बीके डॉ. आदिती सिंघल के हैं जो उन्होंने महाराष्ट्र में नागपुर के वसंत नगर में आयोजित दो दिवसीय सेमिनार में व्यक्त किए। डॉ. आदिती सिंघल आंतरराष्ट्रीय मेमोरी ट्रेनर, गिनीज बुक

रिकार्ड धारी तथा लिम्का बुक रिकार्ड विजेता हैं। संस्थान की ओर से वसंतनगर मुख्यालय में आयोजित संगोष्ठी में बीके आदिती ने वैदिक गणित में विशेषज्ञ होने के कारण छात्रों को गणित के सवालों को आसान तरीके से सुलझाने की भी युक्ति बताई। वैदिक गणित की विशेषज्ञ होने के कारण उन्होंने छात्रों को गणित पढ़ते समय आने वाली उलझनों से कैसे अपने आपको सुलझाया जाये इसका व्यावहारिक ज्ञान दिया। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज नागपुर की संचालिका बीके रजनी उपस्थित थीं। बीके मनिषा ने आभार व्यक्त किया।

तेलंगाना सरकार ने दिया एक लाख सीड बॉल का जिम्मा

शिव आमंत्रण, हैदराबाद। आपने क्रिकेट बॉल या फुटबॉल सुना होगा लेकिन सीड बॉल शायद ही सुना होगा। तेलंगाना सरकार ने ब्रह्माकुमारीज संस्थान को एक हफ्ते में एक लाख सीड बॉल तैयार करने की जिम्मेवारी दी है जिसके तहत हैदराबाद के शांति सरोवर में सैकड़ों की संख्या में बीके सदस्यों ने बड़-चढ़ कर भागीदारी निभाई। इस सीड बॉल में वृक्ष का बीज लाल मिट्टी से ढका हुआ रहता है। जिससे बीज अच्छी तरह से कीट, चींटियों, पक्षियों आदि से सुरक्षित रहता है। यह सीड बॉल एक छोटे इको सिस्टम का बेहतरीन उदाहरण है। सीड बॉल जब सूख जाता है तो इसे



उमंग उत्साह से सीड बॉल बनाने में लगे युवाक।

जहाँ पेड़ों की आवश्यकता होती है वहाँ फैला दिये जाते हैं। मानसून आने पर बीज अंकुरित हो जाते हैं। वृक्षारोपण को बढ़ावा देने का यह सबसे आसान तरीका है। इस पर्यावरण सहायता कि पहल पर नेशनल एकेडमी ऑफ कंस्ट्रक्शन के 200 युवाओं ने भी अपनी प्रेमपूर्वक सेवाओं का सहयोग दिया।



शहरजलपुर के धर्मगुरु सन्मोहन में जिलाधिकारी ने वेंद कुमरसिंह को शिव आमंत्रण भेंट करती बीके संस्था।



नेपाल के विद्यार्थकार के जब विकारित जन प्रतिक्रियाओं का ब्रह्माकुमारीज संस्थान में स्वागत एवं अभिवादन किया गया। बीके शांति व बीके भूषेन्द्र ने जन प्रतिक्रियाओं त्वाव मुक्त जीवन व राजयोग के बारे में बताया।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

योग को अपनी लाईफ स्टाइल बनाओ



एक मंच पर योग का महत्त्व बताने के लिए उपस्थित बाबा रामदेव और बीके शिवानी। शिव आमंत्रण, टोरंटो। अन्तरराष्ट्रीय योगा डे के उपलक्ष्य में कनाडा के सबसे बड़े नगर टोरंटो में शिव इवेंट का आयोजन किया गया। जिसमें भारत से सुप्रसिद्ध योग गुरु बाबा रामदेव और ब्रह्माकुमारीज की जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ बीके शिवानी को मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया। एक ही मंच पर जब संसार के दो सुप्रसिद्ध योगी एक साथ हों तो उपस्थित लोगों का योग के प्रति जागरूक होना स्वाभाविक है। इस इवेंट में ओम की ध्वनि से अपने वक्तव्य की शुरुआत करते हुए योग गुरु बाबा रामदेव ने योग के कई प्रकार व उसके महत्त्व से लोगों को अवगत कराया। उन्होंने कहा, सबके अंदर परमात्मा को देखना ही प्रेम है। वहीं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ बीके शिवानी ने योग के अर्थ और विधि की जानकारी देते हुए योगी लाईफस्टाइल बनाने की बात कही। इसके साथ ही कहा की रिपचुअलिटी और राजयोग सोल की जर्नी करना सिखाता है।

चाईना में हजारो लोग हुये राजयोग से लाभान्वित



शिव आमंत्रण, गांगज़ो। चाईना के गांगज़ो में हीलिंग पॉवर ऑफ मैडिटेशन एण्ड इमोशनल इंटेलेजेंस विषय पर बड़े पैमाने में पब्लिक वेल्फेयर केम्प आयोजित किया गया। इस अवसर पर रिपचुअल रीसर्च एण्ड हीलिंग सेन्टर ने ब्रह्माकुमारीज को आमंत्रित किया, जहाँ चाईना में संस्थान की राजयोग शिक्षिका बीके सजना ने शिरकत की। यह केम्प साउथ चाईना के गांगज़ो की 3 प्रमुख शहरों में भी आयोजित किया गया था, जिसमें हजारों की संख्या में लोगों ने सहभागिता की। गांगज़ो में हीलिंग पॉवर ऑफ मैडिटेशन में 1500 लोगों ने शिरकत की। तो शेनज़ेन में इमोशनल एण्ड स्पीचुअल इंटेलेजेंस में 1300 लोगों ने भाग लिया। फोशन में मैडिटेशन एण्ड इनर स्ट्रेंगथ विषय पर आयोजित कार्यक्रम में 1200 लोग मौजूद हुए। गांगज़ो में आयोजित यह कार्यक्रम कई लोगों को आध्यात्मिक संदेश देने का एक शानदार मौका था।



वाराणसी: चुनार में विंध्य गुरुकुल कालेज के उद्घाटन पर श्रीराम कालानी सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके सरोज को विशेष आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम के पश्चात विधाक रत्नाकर को ईश्वरीय सौगात भेंट करती बीके सरोज



वाराणसी: कार्यक्रम के पश्चात भारत सरकार के मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री महेन्द्र नाथ पांडेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते श्रीराम कालानी सेवाकेन्द्र के ओएन उपाध्याय